ISSN : 2393-9362
वर्ष-दस,अंक-38
अप्रैल - जून 2023

साहित्य सरस्वती

सराय विशेषांक

श्री सरस्वती पुस्तकालय एवं वाचनालय,सागर (म.प्र.)

साहित्य सरस्वती

सराय विशेषांक

हिन्दी त्रैमासिक

वर्ष - दस, अंक - 38, अप्रैल-जून 2023

प्रधान संपादक

डॉ. सुरेश आचार्य

संपादक

डॉ. लक्ष्मी पाण्डेय

उप-संपादक

सरदार पृथ्वीपाल सिंह

प्रो. पुरुषोत्तम सोनी

व्यवस्था एवं परामर्श

- के. के. सिलाकारी, एडवोकेट, अध्यक्ष
- पूर्व सांसद लक्ष्मीनारायण यादव, न्यासी
- डॉ. मीना पिम्पलापुरे, न्यासी
- पं. शुकदेव प्रसाद तिवारी, सचिव

श्री सरस्वती पुस्तकालय एवं वाचनालय सागर की त्रैमासिक पत्रिका

ISSN - 2393-9362
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) द्वारा अनुमोदित जर्नल नं. 47704
Peer reviewed journal वर्ष - दस, अंक - 38, अप्रैल-जून 2023

विषय विशेषज्ञ समिति

प्रो. सुरेश आचार्य, अवकाश प्राप्त, हिन्दी विभाग,
डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर

डॉ. लक्ष्मी पाण्डेय, डी. लिट्, अध्यापक, हिन्दी विभाग,
डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर

प्रो. रूपा गुप्ता, हिन्दी विभाग,
बर्दवान विश्वविद्यालय, कलकत्ता

डॉ. राजीव रंजन गिरी, हिन्दी विभाग,
राजधानी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

संपर्क - सचिव, श्री सरस्वती पुस्तकालय एवं वाचनालय ट्रस्ट,
गौर मूर्ति, सागर (म.प्र.)
फोन : 07582-243759, मो. : 9406519191

- **लेखकों के विचारों से संपादक की सहमति आवश्यक नहीं है।**
- **समस्त कानूनी विवादों का न्याय क्षेत्र सागर (म.प्र.) होगा।**
- **सभी पद पूर्णतः निःशुल्क और अवैतनिक हैं।**
- **रचनाओं के लिए किसी भी प्रकार के भुगतान की व्यवस्था नहीं है।**

आवरण
असरार अहमद सागर

अक्षर संयोजन एवं मुद्रण
अनुज्ञा बुक्स
1/10206, वेस्ट गोरख पार्क, गली नं. 1E
शाहदरा, दिल्ली-110032

सम्पादकीय

बाबा : दुनिया एक सराय

कभी सुनी हुई किसी फिल्मी गाने की यह पंक्ति जब-तब मुझे याद आती रहती है। बाबा की जगह आप चाहें तो बाबू कर लें– 'बाबू दुनिया एक सराय' मगर मामले पर कोई फर्क पड़ने वाला नहीं है। मुसाफिर खाना, सराय, धर्मशाला, गेस्ट-हाउस, सर्किट हाउस या जो नाम चाहें अपनी गलतफहमियों में फँसकर देते रहे। घर, मकान बंगला, पैलेस, महल या भवन। सब यहीं छोड़कर जाना पड़ेगा। इसलिए यह दुनिया सराय ही है। दो-चार दिन की जिन्दगानी तेरी। यहीं बीत जाएगी। विलियम शेक्सपियर तो पूरी दुनिया को रंगमंच मानते थे। जिसमें सब अपनी-अपनी भूमिका निभाने आते-जाते रहते हैं। आदि शंकराचार्य की *पुनरपि जन्मं, पुनरपि मरणम्। पुनरपि जननी जठरे शयनम।।* वाली उक्ति भी इसी बारंबार के रंगमंचावरण पर है। आना-जाना सरायों का भी भाग्य होता है और यात्रियों का भी। सरायों के अपने नियम कायदे होते हैं। दुनिया की तरह। जो इन नियम कायदों से चलता है। वह मजे में रहता है जो नियम कायदे भंग करता है। उसे जिल्लत भी उठानी पड़ती है।

एक जमाना था जब यात्राएँ बड़ी कठिन होती थीं। तब राहों में जगह-जगह भटियारखाने मिलते थे। भट्टी लगाकर खाना बनानेवाले स्थान। आजकल सड़कों के किनारे मिलनेवाले ढाबे उन्हीं का प्रगतिशील संस्करण है। भटियारखाने हों या ढाबे सब सराय के बच्चे हैं। पहले पैदल या बैलगाड़ियों के काफिलों में चलनेवाले यात्री सरायों में रात्रि विश्राम किया करते थे। अब ढाबों के किनारे ट्रक खड़ा करके ड्राइवर खा-पीकर दो-चार घंटे विश्राम करके आगे बढ़ जाते हैं। सरायों में कोई ज्यादा रुकता है कोई कम। कोई सेंचुरी मारता है जिन्दगी के क्रिकेट में तो कोई जीरो पर आउट हो जाता है। अपना-अपना भाग्य है।

अच्छी सराय बनानेवाले गलत तरीके भी अपनाते हैं। नतीजन प्रभावित पक्ष भी उन्हें जल्द से जल्द सराय छोड़ने के लिए उचित-अनुचित तरीके अपनाने लगता है। उत्तरप्रदेश के प्रयागराज में अतीक अहमद को आखिर सराय छोड़ना पड़ी। इतनी विकट ठाँय-ठूँ हुई कि भाई जान सपरिवार सराय छोड़कर चले गए। अब सुपुर्दे-खाक होकर चैन से रोजे हश्र तक सोते रहेंगे।

भाई साहब चाहे जितनी बढ़िया सराय बनवा लें। अपने जीवन के बाद असल घर वही कबीर के कहे अनुसार मिलेगा–

कहा बनावत पौरिया लांबी भीत उसार।
घर तो साढ़े तीन हथ, घणा तो पौने चार।।

इससे बड़ा घर नहीं मिलेगा। सराय तो सराय है। अच्छे से खाली कर दो तो ठीक है। वरना खाली तो करना ही पड़ती है। जेब खाली तो घर खाली। अच्छे ग्राहक पहले से जानते हैं। इसीलिए दुनिया पीर, फकीरों, संन्यासियों से भरी पड़ी है। आगरा पहले अकबराबाद कहलाता था। उस वक्त के बड़े कवि नजीर साहब भारतीय साहित्य जगत में नजीर अकबराबादी के नाम से प्रसिद्ध हैं। वे लिख गए हैं–

सिर काँपा, चाँदी बाल हुए, घोड़े पर जीन धरो बाबा।
अब मौत नकारा बाज चुका चलने की फिक्र करो बाबा।।

और भी बड़ी चेतावनी–

जब चाबुक हाथ ले मौत तेरे इस बैल बदन को हाँकेगा।
कोई नाज समेटेगा तेरे कोई कफन सिंए और टाँकेगा।।
हो ढेर अकेला जंगल में तू खाके-लहद को फाँकेगा।
उस जंगल में फिर आह नजीर इक भुनगा आन न झाँकेगा।।

तो बाबा, दादा, भाई साहब, मालिक फिर-फिर अर्ज है कि हर सराय के कायदे होते हैं। इस दुनिया के सराय का कायदा है दूसरों की सेवा करना, भलाई करना और सत्य के प्रति अनुराग बनाए रखना। सरायों में ठहरनेवालों और रेलयात्रियों में बातचीत के दौरान अक्सर अपनापन कायम हो जाता है। यह अपनापन घनघोर होता है मगर सराय छोड़ते या अपना स्टेशन आते ही स्वतः और तत्काल समाप्त हो जाता है। दुनिया की सराय छूटते ही घर के लोग, परिचित, पड़ोसी इकट्ठे होकर 'जल्दी करो-जल्दी करो' का शोर मचाते रहते हैं। दुनिया में रहने के लिए तरह-तरह के सुख-साधन, सम्बन्ध और सुव्यवस्थाएँ करनेवालों की आँखें खोलते हुए नजीर साहब ने लिखा है–

जब चलते-चलते गौन तेरी यह माटी में मिल जाएगी।
तब बछिया तेरी माटी पर अरे घास न चरने पाएगी।
धी, पूत, जमाई-बेटा क्या बंजारन पास न आएगी।
यह खेप जो लादी है तूने सब मिट्टी में मिल जाएगी।।

सरायों की तरह शहरों के भी भाग्य होते हैं। आने-जाने वालों के हिसाब से उनकी प्रतिष्ठा भी बनती बिगड़ती रहती है। जिस इलाहाबाद में कभी अकबर इलाहाबादी, जवाहरलाल नेहरू, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, महादेवी वर्मा, धर्मवीर भारती जैसे रचनाकार और बड़े साहित्यकार रहे वहाँ लगभग चालीस वर्षों तक अतीक मियाँ की सरकार चली और ऐसी क्रूर कि गाड़ी ओवरटेक करनेवाले अशोक साहू को मौत के घाट उतार दिया। भाजपा में एक नेता का अशरफ नाम था तो उसे इसलिए मार दिया कि भाजपा में सिर्फ अतीक का छोटा भाई अशरफ ही इस नाम का अकेला नेता रहेगा। अतीक मियाँ योगी को भूल गए। बैरागियों और योगियों के न्याय और सब कुछ दाँव पर लगाकर धर्म तथा जनता की रक्षा करनेवालों का दीर्घ इतिहास है। संन्यासी विद्रोह, बंदा बैरागी की बहादुरी आदि ऐतिहासिक उदाहरण अगर अतीक को मालूम होते तो वह पहले ही प्रायश्चित करके भाग खड़ा होता। अतीक की मृत्यु के बाद भी, उनके चकिया स्थित ध्वस्त दफ्तर में खून सना चाकू, ताजे रक्त के धब्बे, खून सना दुपट्टा मिले हैं। इसका क्या आशय है क्या उस ध्वस्त पड़ी सराय में भी कोई कांड हो गया है।

दुनिया एक सराय है। मगर यह सराय थके हुए कर्मठ और परोपकार में लगे लोगों के आराम के लिए है। कुछ रुकते रुकाते परस्पर बतियाते, आनन्द करते-कराते जीवन बिताना ही जिन्दगी की सार्थकता है। जिन्दगी खुली आँखों का सपना है। आँखें बन्द होते ही यह टूट जाता है। फिर काहे की झंझट भाई। हजारों करोड़ की सम्पदा वाले बदहजमी से पीड़ित होकर जिन्दगी काट देते हैं और भी हजारों रोग पीछे लगे रहते हैं। बड़े-बड़े बादशाहों और महाराजों की मजारें और समाधियाँ खंडहर हो रही हैं। फकीर की तरह जिये गांधी की समाधि पर रोज पुष्प चढ़ाए जाते हैं। सो भाई साहब, ठंड रख, ठंड। जाने के दिन सराय छोड़ना ही पड़ेगी। शुभकामनाएँ।

25.4.23

सुरेश आचार्य
प्रधान सम्पादक

यही है जिन्दगी कुछ ख़्वाब चन्द उम्मीदें

पतझड़ का नयनाभिराम महोत्सव चल रहा है। कहीं टूटकर टपकती हुईं, कहीं चक्कर खातीं, उड़कर ऊपर जाकर पुनः नीचे गोते लगातीं सी पीत वर्णी सूखी पत्तियों को कभी हमने हरा, गुलाबी, लाल रंग धारण किए देखा था। भरपूर जीवन जीकर, जीवन का हर रंग देखकर विरक्त-विवर्ण हुई टूटती इन पत्तियों को देखकर परमात्मा की जादूगरी पर मुग्ध हुए बिना नहीं रह सकते। 'अंत' को उत्सवपूर्वक मनाना इस जादुई अंदाज में वही सिखा सकते हैं। 'अंत' ही आरम्भ है या 'अंत' के बाद ही आरम्भ है यह व्यावहारिक शिक्षा देने के लिए ठूँठ हो गए पेड़ों के बीच अमलताश के सोने से दमकते कोमल गुच्छे और नारंगी रंग के गुलदस्तों में परिणत से हो गए गुलमोहरों के दरख्तों के आसपास और यत्र-तत्र हरे कोमल नए पत्तों से भरे वृक्ष गर्म हवा के थपेड़ों में भी झूम रहे हैं। महात्मा कबीर ने भी अंत और आरम्भ का यह दृश्य अवश्य देखा होगा और डूबकर रस विभोर होकर इस रहस्यवादी रचना को जन्म दिया होगा–'दुलहिनी गावहुँ मंगलचार, हमरे घर आए हो राजा राम भरतार।' यह पंक्तियाँ चितारोहण कर रही देह से विलग होकर परमात्मा में विलीन होने का उत्साह प्रदर्शित करती आत्मा की हैं। कबीर ने भी 'अंत' को उत्सवपूर्वक मनाने का गुन सीख लिया था और वही सिखाते रहे।

पश्चिमी साहित्य को पढ़ते हुए एक जगह 'थार्न बर्ड' की विशेषता पढ़ी कि यह चिड़िया अपने अन्तिम समय यानी जीवन के अंत का समय जान लेती है और अन्तिम क्षणों में किसी कँटीली डाल पर बैठ जाती है। काँटा चुभता जाता है और वह धीमे धीमे सुरों में कोई मधुर करुण गीत सा गाती जाती है और धीरे-धीरे समाप्त हो जाती है। जब-जब जिन-जिन पुस्तकों में यह कथा पढ़ी मन एक मीठे से अवसाद में डूब गया। क्या वह थार्न बर्ड अपने जीवन को सार्थक और अविस्मरणीय बनाने के लिए ऐसा त्रासद, मृत्यु पथ चुनती है ताकि उस त्रास से, तकलीफ से ऐसा मधुर और करुण गीत रचकर सुना सके जिसके लिए संसार उसे याद रखे। जो सामान्य पक्षी के सामान्य कलरव से हटकर उसे विशिष्ट बना सके। यानी जीवन को सार्थक बनाने का बोध उस पक्षी में भी है? जीवन की सार्थकता संसार को कुछ विशिष्ट देने में है जो सुन्दर हो और लोकमंगलकारी भी। अपने मधुर करुण विदा गीत से संसार को सुख देने के अतिरिक्त और उसके पास था भी क्या? पक्षियों के सामर्थ्य की अपनी सीमा है।

असीम सामर्थ्य केवल मनुष्य के पास होती है लेकिन क्या वह जीवन की सार्थकता के सम्बन्ध में इतनी गम्भीरता से सोचता है? या उस पक्षी की तरह प्राण दाँव पर लगा कर समाज को सुख देने की बात सोचता है? सब नहीं लेकिन होते हैं कुछ लोग जो थार्न बर्ड की तरह अपना एक अलग मकाम रखते हैं। क्या पंत जी ने भी इस 'थार्न बर्ड' को जाना होगा, जब उन्होंने लिखा– 'वियोगी होगा पहला कवि, आह से उपजा होगा गान, निकलकर आँखों से चुपचाप वही होगी कविता अनजान।' वियोग की कँटीली डाल पर बैठकर वाल्मीकि ने रामायण और तुलसीदास ने रामचरितमानस लिखी। उसके पूर्व तो रत्नाकर डाकू का भोग और गृहस्थ योग प्रबल था, अनाथ तुलसीदास का रत्नावलीमय संसार वैभवपूर्ण था। क्या इसीलिए तुलसीदास वाल्मीकि कबीर विश्व मन को घेर घार कर बैठ गए हैं?